NJESR/JAugust-2025/Volume-7/Issue-8 E-ISSN-2582-5836
DOI-10.53571/NJESR.2025.8.7.8-11

बुद्धिष्ट सर्किट के चारों ओर साक्षरता वृद्धि से सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन

नेहा कुमारी
शोध- छात्रा, स्नातकोत्तर भूगोल विभाग,
वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा

प्रो० संजय कुमार
स्नातकोत्तर, भूगोल विभाग
महाराजा कॉलेज, आरा

(Received -15 July 2025/Revised 30 July 2025/ Accepted- 10 August 2025/ Published -30 August 2025)

सारांश (Abstract):

बुद्धिष्ट सर्किट के चारों ओर साक्षरता वृद्धि से सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन विषयक यह अध्ययन भारत के उन ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक रूप से समृद्ध क्षेत्रों पर केंद्रित है, जो बौद्ध धर्म की धरोहर से जुड़े हुए हैं। इन क्षेत्रों में बोधगया, सारनाथ, कुशीनगर, वैशाली, राजगीर और लुंबिनी (नेपाल) जैसे स्थल शामिल हैं, जिन्हें 'बुद्धिष्ट सर्किट' कहा जाता है। ये क्षेत्र धार्मिक पर्यटन के महत्वपूर्ण केंद्र हैं, लेकिन यहाँ की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति अभी भी अपेक्षित स्तर तक नहीं पहुँच पाई है। इसका एक प्रमुख कारण है – साक्षरता की कमी। इतिहास से यह क्षेत्र शैक्षणिक और बौद्धिक गतिविधियों के केंद्र रहे हैं, फिर भी

आज के समय में यहाँ साक्षरता का स्तर अपेक्षाकृत कम है, विशेषकर महिलाओं, युवाओं और समाज के वंचित वर्गों में। इस अध्ययन का निष्कर्ष यह है कि जब इन समुदायों में साक्षरता को बढ़ावा दिया जाता है, तो उसका प्रभाव केवल शिक्षा तक सीमित नहीं रहता, बल्कि यह व्यापक सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन की प्रक्रिया को गति देता है। साक्षरता व्यक्तिगत आत्मनिर्भरता, जागरूकता एवं आत्मविश्वास को सुदृढ़ करती है। इससे स्थानीय लोगों की भागीदारी पर्यटन, हस्तशिल्प, सेवा उद्योग, शिक्षा और लघु उद्यमिता जैसे क्षेत्रों में बढ़ती है। उदाहरण के लिए, पढ़े-लिखे युवक-युवतियाँ पर्यटकों के लिए गाइड, अनुवादक या होम-स्टे संचालक के रूप में कार्य कर सकते हैं, जिससे उन्हें आजीविका के अवसर प्राप्त होते हैं। इससे न केवल क्षेत्रीय बेरोजगारी कम होती है, बल्कि गरीबी भी घटती है और जीवन स्तर में सुधार होता है। साक्षरता सामाजिक कुरीतियों पर भी प्रभाव डालती है। पढ़े-लिखे नागरिक जातीय भेदभाव, लैंगिक असमानता, बाल विवाह और अंधविश्वास जैसी समस्याओं को समझते हैं और उनके विरुद्ध आवाज़ उठाते हैं। साथ ही, वे पर्यावरण संरक्षण, सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण और स्थानीय प्रशासन में सक्रिय भूमिका निभा सकते हैं।

अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि बुद्धिष्ट सर्किट के क्षेत्रों में साक्षरता का विस्तार समावेशी, टिकाऊ और व्यापक सामाजिक-आर्थिक विकास की दिशा में एक प्रभावी कदम है। यह न केवल स्थानीय समुदायों को सशक्त बनाता है, बल्कि भारत की बौद्ध विरासत को वैश्विक मंच पर सम्मानपूर्वक प्रस्तुत करने का मार्ग भी प्रशस्त करता है।

मुख्य -शब्द (Kew words): बुद्धिष्ट सर्किट, साक्षरता वृद्धि, सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन, धार्मिक- पर्यटन, क्षेत्रीय बेरोजगारी

परिचय:

बौद्ध धर्म की धरोहर सिर्फ एक आध्यात्मिक या धार्मिक विषय नहीं है, बल्कि यह समाज और अर्थव्यवस्था में बदलाव लाने की भी बड़ी संभावना रखती है। 'बुद्धिष्ट सर्किट' एक ऐसी योजना है, जिसमें भगवान बुद्ध के जीवन और उनके उपदेशों से जुड़े प्रमुख स्थानों को जोड़ा गया है, जैसे – बोधगया, सारनाथ, कुशीनगर, वैशाली, लुंबिनी (नेपाल), राजगीर और कपिलवस्तु। ये जगहें सिर्फ धार्मिक तीर्थ स्थल नहीं हैं, बल्कि ये संस्कृति, शिक्षा, पर्यटन और स्थानीय लोगों की आजीविका के लिहाज से भी बहुत महत्वपूर्ण हैं। इन क्षेत्रों के विकास में साक्षरता यानी पढ़ने-लिखने की योग्यता की बहुत अहम भूमिका होती है। साक्षरता सिर्फ अक्षर पहचानने तक सीमित नहीं रहती, बल्कि

Created by Universal Document Converter

यह लोगों में आत्मविश्वास बढ़ाती है, उन्हें उनके अधिकारों के बारे में जागरूक बनाती है, और समाज को आगे बढ़ाने में मदद करती है। जब बुद्धिष्ट सर्किट में आने वाले इलाकों में शिक्षा का स्तर बढ़ता है, तो इसके कई अच्छे नतीजे सामने आते हैं – जैसे लोग बेहतर रोज़गार पा सकते हैं, अपने जीवन स्तर को सुधार सकते हैं, और समाज में बराबरी का माहौल बनता है। इससे पूरे क्षेत्र का सामाजिक और आर्थिक विकास संभव हो पाता है।

महिला सशक्तिकरण: महिलाओं में साक्षरता बढ़ने से वे स्वास्थ्य और पोषण संबंधी सही फैसले ले पाती हैं। शिक्षित महिलाएं परिवार नियोजन के महत्व को समझती हैं और बेहतर विकल्प चुनती हैं। साक्षरता उन्हें आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनने के अवसर देती है। इससे उनका आत्मविश्वास बढ़ता है और वे परिवार व समाज के विकास में सक्रिय भागीदारी निभाती हैं।

1. **सामाजिक समानता:** बुद्ध के उपदेशों में सभी को समान दृष्टि से देखने पर बल दिया गया था। उनकी शिक्षा ने जाति, लिंग और वर्ग के भेदभाव को चुनौती दी। शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति ज्ञान और करुणा के मार्ग पर चलता है, जो समानता को बढ़ावा देता है। आज भी बुद्ध के विचार समाज में समानता और न्याय की भावना पैदा करने में प्रेरणा देते हैं।
2. **सामुदायिक भागीदारी:** शिक्षित लोग अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति जागरूक होते हैं। वे पंचायत और स्थानीय निकायों के कामकाज को समझते हैं और उसमें भागीदारी करते हैं। विकास योजनाओं में उनकी भागीदारी से पारदर्शिता और प्रभावशीलता बढ़ती है। इससे गांव और समाज के समग्र विकास में सकारात्मक योगदान मिलता है।

❖ **<u>आर्थिक परिवर्तन:</u>** बुद्धिष्ट सर्किट के अंतर्गत क्षेत्रों में साक्षरता की वृद्धि आर्थिक गतिविधियों को नए आयाम देती है। कुछ प्रमुख परिवर्तन निम्नलिखित हैं:

1. **स्थानीय रोजगार में वृद्धि:** पर्यटन से जुड़े क्षेत्रों में स्थानीय लोगों को रोज़गार के नए अवसर मिलते हैं। वे गाइडिंग, होटल प्रबंधन, हस्तशिल्प निर्माण और परिवहन सेवाओं में भाग लेते हैं। इससे उनकी आमदनी बढ़ती है और जीवन स्तर सुधरता है। साथ ही, स्थानीय संस्कृति और परंपराओं को भी नया जीवन मिलता है।
2. **उद्यमिता का विकास**: बुद्ध के विचारों ने आत्मनिर्भरता और कर्म की महत्ता पर ज़ोर दिया। साक्षर युवा नए आइडिया और तकनीक की समझ रखते हैं, जिससे वे अपने क्षेत्र की ज़रूरतों को पहचानते हैं। वे स्थानीय संसाधनों जैसे कृषि, हस्तशिल्प या पर्यटन का उपयोग कर अपना व्यवसाय शुरू कर सकते हैं। इससे उन्हें आत्मनिर्भर बनने का मौका मिलता है और रोजगार के नए अवसर भी बनते हैं। ऐसे प्रयासों से गांव और क्षेत्र की अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलती है।
3. **डिजिटल साक्षरता और ई-कॉमर्स:** डिजिटल शिक्षा से ग्रामीण लोग तकनीक का उपयोग करना सीखते हैं। वे ऑनलाइन व्यापार शुरू कर सकते हैं और अपनी आय के नए स्रोत बना सकते हैं। सरकारी योजनाओं की जानकारी उन्हें आसानी से मिल जाती है। साथ ही, डिजिटल लेन-देन से समय की बचत और पारदर्शिता बढ़ती है।
4. **सामुदायिक भागीदारी:** शिक्षित लोग पंचायत और स्थानीय निकायों की कार्यप्रणाली को बेहतर ढंग से समझते हैं। वे अपने अधिकारों और जिम्मेदारियों के प्रति जागरूक होते हैं। इससे वे विकास योजनाओं में सक्रिय भूमिका निभाते हैं और पारदर्शिता सुनिश्चित करते हैं। उनकी भागीदारी से योजनाओं का सही क्रियान्वयन और समाज का समग्र विकास संभव होता है।

❖ **<u>नवाचार और नई प्रवृत्तियाँ (New Trends):</u>**

1. **एडुटेक (EdTech) प्लेटफ़ॉर्म्स का उपयोग**: कोविड-19 के बाद डिजिटल शिक्षा ने बुद्धिष्ट सर्किट से जुड़े ग्रामीण क्षेत्रों में नई दिशा दी है। स्मार्टफोन और इंटरनेट की सहायता से यहाँ के विद्यार्थी अब ऑनलाइन शिक्षा से जुड़ पा रहे हैं। BYJU's और Diksha App जैसे EdTech प्लेटफ़ॉर्म्स ने बुद्ध से जुड़े क्षेत्रों में भी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को सुलभ बनाया है। इससे युवा साक्षर हो रहे हैं, आत्मनिर्भर बन रहे हैं और सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन में भागीदार बन रहे हैं।
2. **प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम:** बुद्धिष्ट सर्किट से जुड़े ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक जागरूकता और विकास का माध्यम बन रहा है। सरकार और गैर-सरकारी संगठनों द्वारा चलाई जा रही ये योजनाएँ वयस्कों

Created by Universal Document Converter

को पढ़ने-लिखने की क्षमता ही नहीं, बल्कि आत्मविश्वास और अधिकारों की समझ भी देती हैं। बुद्ध के विचारों – समानता, ज्ञान और करुणा – से प्रेरित ये प्रयास सामाजिक भेदभाव को कम करने में सहायक हैं। इस प्रकार, प्रौढ़ साक्षरता से स्थानीय लोग सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं।

3. **कार्यकुशलता आधारित शिक्षा (Skill-Based Learning):** अब बुद्धिष्ट सर्किट से जुड़े क्षेत्रों में केवल सैद्धांतिक शिक्षा ही नहीं, बल्कि व्यावसायिक प्रशिक्षण पर भी ज़ोर दिया जा रहा है। यह परिवर्तन बुद्ध के कर्मयोग और आत्मनिर्भरता के सिद्धांतों से मेल खाता है। युवा तकनीकी दक्षता प्राप्त कर पर्यटन, हस्तशिल्प, और स्थानीय संसाधनों पर आधारित स्वरोजगार शुरू कर रहे हैं। इससे न केवल उनकी आय बढ़ रही है, बल्कि पूरे क्षेत्र में सामाजिक और आर्थिक विकास को गति मिल रही है। प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना **(PMKVY - Pradhan Mantri Kaushal Vikas Yojana)** यह योजना युवाओं को व्यावसायिक प्रशिक्षण (Vocational Training) प्रदान करती है, जिससे वे तकनीकी दक्षता हासिल कर स्वरोजगार या रोजगार प्राप्त कर सकें। यह योजना बौद्ध पर्यटन स्थलों के पास रहने वाले युवाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने में मदद कर रही है।
4. **स्थानीय भाषा में शिक्षा:** क्षेत्रीय भाषाओं में डिजिटल और प्रिंट सामग्री मिलने से शिक्षा अब अधिक समझ में आने योग्य बन गई है। छात्र अपनी मातृभाषा में पढ़ाई कर आसानी से विषयों को समझ पाते हैं। यह खासकर ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों के विद्यार्थियों के लिए फायदेमंद साबित हुआ है। इससे शिक्षा का स्तर बढ़ा है और सीखने में रुचि भी तेज़ी से बढ़ी है।

❖ **<u>चुनौतियाँ:</u>**

- **बुनियादी ढांचे की कमी:** कई ग्रामीण और दूर-दराज़ क्षेत्रों में अब भी स्कूलों की संख्या सीमित है। पुस्तकालय, इंटरनेट और बिजली जैसी बुनियादी सुविधाओं का अभाव शिक्षा में बाधा बनता है। इन संसाधनों की कमी से बच्चों की सीखने की क्षमता और डिजिटल शिक्षा का लाभ सीमित रह जाता है।
- **सामाजिक रूढ़ियाँ:** कुछ समुदायों में अब भी शिक्षा को ज़रूरी नहीं माना जाता, जिससे बच्चों को स्कूल भेजने में रुचि नहीं दिखाई जाती।परंपरागत सोच के चलते विशेषकर बालिकाओं की पढ़ाई को महत्व नहीं दिया जाता। अज्ञानता, सामाजिक दबाव और बाल विवाह जैसी समस्याएँ भी इसमें बाधा बनती हैं। इससे लड़कियों की साक्षरता दर और भविष्य के अवसरों पर नकारात्मक असर पड़ता है।
- **प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी:** जब योग्य और संवेदनशील शिक्षक नहीं होते, तो बच्चों को सही मार्गदर्शन और समझ नहीं मिल पाती। ऐसे शिक्षक शिक्षा को रुचिकर और प्रेरणादायक बनाने में असफल रहते हैं। इससे शिक्षा की गुणवत्ता प्रभावित होती है और छात्रों की सीखने की रुचि कम हो जाती है।

❖ **<u>बुद्धिष्ट सर्किट के द्वारा किए गए कुछ कार्य:</u>**

- **बोधगया (बिहार):** बुद्धिष्ट सर्किट से जुड़े क्षेत्रों में कई NGOs और स्थानीय संस्थाएं महिला साक्षरता को बढ़ावा दे रही हैं। इन अभियानों के ज़रिए महिलाएं पढ़ना-लिखना सीख रही हैं और आत्मविश्वास से भर रही हैं। शिक्षा मिलने के बाद वे छोटे व्यवसाय जैसे सिलाई, हस्तशिल्प या दुकानदारी से जुड़ रही हैं। इससे वे आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन रही हैं और समाज में उनकी भूमिका सशक्त हो रही है।
- **सारनाथ (उत्तर प्रदेश):** बुद्धिष्ट सर्किट के ग्रामीण क्षेत्रों में पर्यटन के बावजूद शिक्षा का प्रसार पहले धीमा था। लेकिन मोबाइल शिक्षा वैन और डिजिटल केंद्रों ने दूरदराज़ इलाकों में शिक्षा की पहुंच बढ़ाई है। अब बच्चे और युवा आसानी से डिजिटल माध्यम से सीख पा रहे हैं। इससे शिक्षा का स्तर सुधरा है और समाज में जागरूकता बढ़ी है।
- **कुशीनगर (उत्तर प्रदेश):** कुशीनगर में स्किल डेवलपमेंट प्रोग्राम्स के तहत सैकड़ों युवाओं को खास प्रशिक्षण दिया गया है। इन कार्यक्रमों में आतिथ्य सेवा और गाइडिंग के कौशल सिखाए जाते

Created by Universal Document Converter

हैं। इससे युवा पर्यटन उद्योग में रोजगार के बेहतर अवसर प्राप्त कर रहे हैं। यह पहल स्थानीय अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाने में मददगार साबित हो रही है।

❖ **<u>सरकारी योजनाएँ (Government scham):</u>**

- **समग्र शिक्षा अभियान:** प्रारंभिक से माध्यमिक शिक्षा तक समावेशन और समानता सुनिश्चित करने से सभी बच्चों को बराबर अवसर मिलते हैं। इससे शिक्षा की गुणवत्ता बेहतर होती है और सामाजिक विकास को मजबूती मिलती है।
- **नेशनल डिजिटल एजुकेशन आर्किटेक्चर (NDEAR):** डिजिटल संसाधनों का व्यापक उपयोग।
- **प्रधानमंत्री ग्राम डिजिटल साक्षरता अभियान (PMGDISHA):** का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल ज्ञान फैलाना है। इस योजना के तहत लोगों को कंप्यूटर, इंटरनेट और डिजिटल सेवाओं का उपयोग करना सिखाया जाता है। इससे ग्रामीण जनता सरकारी योजनाओं, ऑनलाइन लेन-देन और रोजगार के अवसरों से जुड़ पाती है।

❖ **<u>निष्कर्ष:</u>**

बुद्धिष्ट सर्किट के अंतर्गत आने वाले क्षेत्रों में साक्षरता वृद्धि न केवल व्यक्ति विशेष के जीवन में परिवर्तन लाती है, बल्कि यह समग्र सामाजिक-आर्थिक ढांचे को भी सकारात्मक रूप से प्रभावित करती है। शिक्षा के माध्यम से स्थानीय समुदाय आत्मनिर्भर बनते हैं, महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा मिलता है, और बौद्ध धरोहरों के संरक्षण एवं प्रचार में भी योगदान होता है। नवाचार और तकनीकी साधनों का उपयोग कर यदि साक्षरता अभियान को गति दी जाए, तो यह क्षेत्र आने वाले वर्षों में देश के सामाजिक-आर्थिक मानचित्र पर एक उज्ज्वल उदाहरण बन सकता है।

<u>संदर्भ (Reference):</u>

UNESCO. (2023). *Global Education Monitoring Report.*
नीति आयोग. (2023). *भारत@2047 रिपोर्ट।*
Ministry of Tourism, India. (2022). *Annual Report.*
MeitY. (2021). *Digital India Initiative.*
NSDC. (2023). *Skill India Mission Annual Report.*
ASER Centre. (2022). *Annual Status of Education Report.*
Ministry of Education, Govt. of India. (2020). *Padhna Likhna Abhiyan.*
Pratham Education Foundation. (2023). *Impact Reports.*
Teach For India. (2023). *Education Equity Reports.*

Created by Universal Document Converter